2

धन्यवाद और प्रार्थना

(फिलेमोन 47)

पौलुस आम तौर पर अपने पत्रों का आरम्भ धन्यवाद, प्रार्थना और सलाम के साथ करता था, चाहे उसके लिए यह एक मानक कौम था, परन्तु हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि यह मात्र एक संस्कार या केवल संदेश के "सार" में लिए जाने का विनम्र ढंग था, बल्कि धन्यवाद और प्रार्थना से आम तौर पर उसके विषय वस्तुओं का परिचय होता था, जिन्हें पौलुस पत्र के मुख्य भाग में और विस्तार से बताता था। नीचे दिए चार्ट से ऐसा दिखाया गया है जिसमें उस ढंग की ओर ध्यान दिलाया गया है (आयतें 4–7) जिसमें पौलुस पत्र के मुख्य भाग से मुख्य शब्दों का परिचय देता है (आयतें 8–22)।

फिलेमोन में मुख्य शब्द

मुख्य शब्द	धन्यवाद और प्रार्थना (आयतें 4–7)	पत्र का मुख्य भाग (आयतें 8–22)
"प्रार्थनाएं"	आयत 4	आयत 22
"प्रेम"	आयतें 5, 7	आयत 9
"सहभागी"	आयत 6	आयत 17
"भलाई"	आयत 6	आयत 14
"मन"	आयत 7	आयतें 12, 20
"हरे-भरे"	आयत 7	आयत 20
"भाई"	आयत 7	आयत 20

4–7

[4]मैं तेरे उस प्रेम और विश्वास की चर्चा सुनकर, जो सब पवित्र लोगों के साथ और प्रभु यीशु पर है। [5]सदा परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं; और अपनी प्रार्थनाओं में भी तुझे स्मरण करता हूं। [6]कि तेरा विश्वास में सहभागी होना तुम्हारी सारी भलाई की पहिचान में मसीह के लिए प्रभावशाली हो। [7]क्योंकि हे भाई, मुझे तेरे प्रेम से बहुत आनन्द और शान्ति मिली, इसलिए कि तेरे द्वारा पवित्र लोगों के मन हरे-भरे हो गए हैं।

आयत 4. इस प्रकार के प्रोत्साहित करने वाले शब्दों में फिलेमोन के मन को शांत कर दिया होगा। प्रेरित ने लिखा, **मैं तेरे उस प्रेम और विश्वास की चर्चा सुनकर**। यह पत्र एक ऐसे

व्यक्ति की ओर से आया था जिसे इपफ्रास (कुलुस्सियों 1:7, 8; फिलेमोन 23) और उनेसिमुस के माध्यम से कुलुस्से की स्थिति का पता चला था। उन्होंने फिलेमोन के बारे में क्या कहा था? क्या उनेसिमुस और उसके स्वामी की स्थिति होने के कारण पौलुस ने उसके बारे में कम सोचा? क्या फिलेमोन को आम लोगों के बीच में डांट मिलने वाली थी। ऐसे भय इस सकारात्मक आयत से खत्म हो गए।

पौलुस ने फिर उस प्रेम और विश्वास की बात की, जो फिलेमोन को **सब पवित्र लोगों के साथ और प्रभु यीशु पर** था। यह साहित्यिक रचना का एक उदाहरण लगता है, जो आम तौर पर यूनानी साहित्य में इस्तेमाल होता था। जिसे *chiasmus* (यूनानी अक्षर *chi*) कहा जाता है। इस संरचना में पहले और चौथे शब्द दूसरे और तीसरे की तरह एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं (a-b-b-a) यहां पर फिलेमोन का प्रेम ''सब पवित्र लोगों'' के साथ जुड़ा है। उसका विश्वास ''प्रभु यीशु'' से जुड़ा है।

a-''तेरे प्रेम''
b-''तेरे विश्वास''
b-''जो है प्रभु यीशु पर''
a-''पवित्र लोगों के साथ''

फिलेमोन के ''प्रभु यीशु पर विश्वास ... प्रभु यीशु पर और उसके प्रेम ... जो सब पवित्र लोगों के साथ है'' इस पत्र के मुख्य विषय हैं।

''पवित्र लोगों'' मसीही लोगों की बात करते हुए पौलुस की पसंदीदा अभिव्यक्ति थी। मूलतया नये नियम में मूलतया ''पवित्र लोग'' अर्थात ''संतों'' का विचार विश्वास के विशेष नायकों का नहीं, बल्कि उनके लिए है जिन्हें परमेश्वर ने यीशु के लहू के द्वारा मसीही बनाया है (देखें रोमियों 1:7; 16:15)

आयत 5. परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं अपने पत्रों के इस भाग का आरम्भ करने के लिए पौलुस का मानक फॉर्मूला है (देखें रोमियों 1:8; 1 कुरिन्थियों 1:4; फिलिप्पियों 1:3)। **सदा** आयत के मध्य में मिलता है इसे या तो यह बताने के लिए कि पौलुस ने कितनी बार धन्यवाद दिया (NASB; NIV; RSV) या उसने अपनी प्रार्थनाओं में पत्र के प्राप्तकर्त्ताओं को कितनी बार याद किया है (KJV)। **और अपनी प्रार्थनाओं में भी तुझे स्मरण करता हूं।** इस बात को याद दिलाने के लिए था कि उनकी ओर से परमेश्वर के सामने अपनी लगातार प्रार्थनाओं के द्वारा प्रेरित ने उन मसीही लोगों के साथ, जिन्हें वह जानता था और उन कलीसियाओं के साथ जो उसने स्थापित की थी, एक मज़बूत रिश्ता बनाए रखा था। जेल ने चाहे उसे शारीरिक रूप में उनसे अलग कर दिया था, परन्तु प्रार्थना ने उनके बीच संगति के आत्मिक बंधन बनाए रखे थे।

इस आयत में एक बड़ा बदलाव होता है। सलाम में सम्बोधन दो जनों पौलुस और तीमुथियुस की ओर से पूरी कलीसिया की ओर से तीन विशेष लोगों के नाम था। यह बदलाव आयत 4 में आता है जब पौलुस प्रथम पुरुष एक वचन (मैं) केवल फिलेमोन के लिए कहने लगा।[1] इस पत्र के संदर्भ में तीमुथियुस, अफफिया, अर्खिप्पुस, और कुलुस्से की शेष कलीसिया

थी परन्तु मख्य भागीदार पौलुस और फिलेमोन ही हैं।

आयत 6. पौलुस ने प्रार्थना की, **तेरा विश्वास में सहभागी होना तुम्हारी सारी भलाई की पहिचान में मसीह के लिए प्रभावशाली हो।** जोसेफ ए. फिज़मायर ने सही ही कहा है, "पूरे पत्र में समझने के लिए यही आयत सबसे कठिन है।"[2] परन्तु यहां आने वाली समस्याओं के बावजूद समृद्ध शब्दावली पाठक को आने वाले अगले संदेश के लिए तैयार करती है।

इस संदर्भ में NIV में है पौलुस फिलेमोन से "[अपने] विश्वास को बांटने में सक्रिय होने" के लिए प्रोत्साहित कर रहा था। परन्तु संदेश यह बताने के लिए नहीं था कि फिलेमोन को और अधिक इवैंजलिस्टक यानी सुसमाचार सुनाने वाला होना चाहिए जैसा कि आज इस्तेमाल होने वाली भाषा में होगा। "सहभागी" (*koinōnia*) "अपने संसाधनों को बांटने," "साझे का होना" या "देना" के विचार का सुझाव देता है। फिलेमोन का विश्वास निजी बात नहीं थी; इसे पौलुस, उनेसिुस और फिलेमोन के घर की कलीसिया के साथ साझा किया जाना आवश्यक था। फिलेमोन अपने भाइयों के साथ पहले से अपने घर को साझा कर रहा था। अब उसे मसीही दास का स्वामी होने के अर्थ पर काम करते हुए उन्हें भी अपने विश्वास को बताने के लिए कहा जा रहा है।

"प्रभावशाली" का अनुवाद यूनानी शब्द *energēs* से किया गया है, जिससे हमें अंग्रेज़ी भाषा का शब्द "एनर्जी" मिला है। इसका अर्थ "उपयोगी" (1 कुरिन्थियों 16:9) या "प्रबल" (इब्रानियों 4:12) हो सकता है। *Energēs* का सम्बन्ध सामर्थ अर्थात "क्षमता को व्यवहारिक रूप में दिखाने" से है।[3] यदि फिलेमोन ने इस पत्र में पौलुस की अपील का उत्तर सकारात्मक ढंग से न दिया होता तो उसका विश्वास निष्फल, बेकार और कमज़ोर साबित होना था। दूसरी ओर उनेसिमुस के सम्बन्ध में सही काम करने में विनम्रतापूर्वक सुनकर दृढ़ता से काम करने पर निश्चय ही उसने उन सब के लिए आशीष बनना था जिनके साथ उसने अपना विश्वास साझा किया था।

"तुम्हारी सारी भलाई की पहिचान में मसीह के लिए" (आयत 6)। यह उतना बौद्धिक ज्ञान का संकेत नहीं देता जितना अनुभव की गई किसी गहन वास्तिवकता का। "तुम्हारी" वे एक अनिश्चित वचन है जिसमें या तो "तुम में" (NASB; KJV) या बहुवचन "हम में" है (NIV; RSV) सम्भव है। यहां पर बहुवचन का होना पत्र के सामान्य नमूने का अपवाद है परन्तु इसकी उम्मीद की जाती है क्योंकि चर्चा अधीन विषय सहभागिता को साझा करना है।

"मसीह के लिए" मूलतया "मसीह में" है। यह पूरी आयत जैसे चाहे जैसी भी हो डी. जी. डन्न ने निष्कर्ष निकाला है:

> इस विचार में साझे विश्वास का संयुक्त स्वभाव सम्मिलित होना मुख्य बात है; पौलुस के धार्मिक विचार को निजी बात के विचार के रूप में बढ़ावा देने की इच्छा नहीं थी, जिसका व्यक्ति अकेले ही अलग व्यक्ति के रूप में आनन्द ले और उसे माने।[4]

कुल मिलाकर लगता है कि पौलुस कुछ इस प्रकार से कह रहा था:

> हे फिलेमोन, तेरे लिए मेरी प्रार्थना अपने घर और अपने जीवन को कुलुस्से की कलीसिया के साथ इतने अनुग्रहपूर्वक साझा करने की है, जैसा कि तू पहले ही करता है। अब जो कुछ मैं तुझे कहने वाला हूं उसी के आधार पर मैं प्रार्थना करता हूं। अब जो मैं तुझ से कहने वाला हूं उसे ध्यान में रखते हुए मेरी प्रार्थना है कि ऐसा अनुग्रहपूर्वक स्वभाव उनेसिमुस को भी दिया जाए। परमेश्वर के लोगों की सहभागिता में अविश्वसनीय भलाई खोजी है। यदि हम देख पाते कि यह बात इतनी सच है, तो हम सब हैरान चकित होते। कई बार समस्याओं और परेशानियों के बीच हम इसे भूल जाते हैं। अब अगर तुम उसकी झलक भी पा सको, जो परमेश्वर तुम्हारे जीवन में कर रहा है तो तुम्हें उस सहभागिता की गहराई का अनुभव होगा, जो तुम्हें पहले कभी नहीं मिली थी। इस नाजुक पल में दूसरों को बाहर मत निकालो। उनेसिमुस के साथ यह "समस्या" वास्तव में तुम्हारे लिए मसीह के साथ चलने पर बढ़ने का ज़बरदस्त अवसर है। प्रभु यीशु हमारे हर काम में महिमा पाए।

आयत 7. आयत 7, आयत 6 वाली पौलुस की प्रार्थना का भाग है या नहीं इस पर बहस हो चुकी है। प्रार्थना के आयत 8 वाली पौलुस की विनती की ओर मुड़ते हुए यह "कब्ज़े" का काम करती हुई लगती है। आयत 7 प्रेरित के उनेसिमुस की ओर से बोलने के नाज़ुक कार्य को आरम्भ करने से पहले उसमें भरोसा जताते हुए फिलेमोन के लिए प्रतिज्ञा से भरी है। फिलेमोन के लिए जो कुछ यहां कहा गया है, वह सब मसीही लोग अपने बारे में कहने की आशा कर सकते हैं।

प्रेरित ने कहा, **क्योंकि हे भाई, मुझे तेरे प्रेम से बहुत आनन्द और शान्ति मिली।** "आनन्द" परमेश्वर के पवित्र आत्मा का एक फल है (गलातियों 5:22) और व्यक्ति के जीवन में उसकी उपस्थिति का संकेत है। फिलेमोन को स्मरण करते हुए पौलुस अवश्य मुस्कराया होगा। "शांति" एक और स्पष्ट और सकारात्मक शब्द है, जिसे पौलुस ने फिलेमोन के लिए इस्तेमाल किया। जिस यूनानी शब्द का इस्तेमाल उसने किया उसका अनुवाद "सांत्वना" भी हो सकता है और उसमें "किसी दूसरे के मनों को उकसाना" शामिल है।[5] पौलुस ने संकेत दिया कि वह मज़बूत, प्रसन्न मसीही है क्योंकि फिलेमोन उसका "सहकर्मी" है (आयत 1)। आनन्द और शांति फिलेमोन के प्रेम से मिली थी। दो आयतों के बाद पौलुस ने उनेसिमुस की ओर से इसी प्रेम की बात की (आयत 9)।

पौलुस ने **पवित्र लोगों के मन** की बात की। यह तीन में से पहली बार है, जब उसने मानवीय भावनाओं के साथ (देखें आयतें 12, 20) की बात करने के लिए मज़बूत यूनानी संज्ञा शब्द *splagchna* का इस्तेमाल किया। इस शब्द का मूल अर्थ "अंदरूनी अंग, अंतड़ियां" है।[6] "दिल के नीचे कहीं" आज इस विचार को व्यक्त करने का एक ढंग है। अपने मनों में पवित्र लोग यानी संत **हरे-भरे हो गए** थे। यूनानी क्रिया शब्द (*anapauō*) से अनुवाद हुए शब्द का अर्थ "किसी को *परिश्रम से राहत दिलाना, ... विश्राम दिलाना, (किसी को) विश्राम देना, ताज़गी, फिर से चालू करना*"[7] है। सहिभागिता और उद्धारता के साकार कामों में दिखाया गया कि फिलेमोन के प्रेम ने पवित्र लोगों के मनों को हरे-भरे किया था। इसके ज्ञान से पौलुस आनन्द और शांति से भर गया था।

हे भाई, तेरे द्वारा इस पत्र के परिचय को पूरा होता है। सामान्य अभिव्यक्ति "हे भाई"

विशेष अर्थ ले लेती है क्योंकि पौलुस ने बाद में उस ढंग के विवरण के लिए इस्तेमाल किया, जिससे फिलेमोन को अपने दास उनेसिमुस को एक भाई के रूप में देखना चाहिए (आयत 16)।

प्रासंगिकता

अपने विश्वास को साझा करना (आयत 6)

मसीही विश्वास कभी भी निजी होने के लिए नहीं दिया गया था। आरम्भ से ही किसी से लोगों में अनुभव किया जाना था (प्रेरितों 2:41-47)। मसीही लोग मिलकर प्रार्थना करते, खाते, आराधना करते, बांटते, जश्न मनाते, और दुख सहते थे। अकेले मसीही का विचार सोचा भी नहीं जा सकता था।

जिस बात को कभी सोचा भी नहीं जा सकता था, आज वही आम पाई जाती है। ''व्यक्तिगत विश्वास'' होना बहुत लोगों द्वारा हर मसीही की सबसे बड़ी प्राप्ति के रूप में देखा जाता है और सहभागिता को एक वैकल्पिक विचार अतिरिक्त वस्तु के रूप में देखा जाता है। कई तो यह कहने में बड़ी बहादुरी समझते हैं कि ''यीशु को हां! कलीसिया को न!''

फिलेमोन के नाम पौलुस का पत्र अत्यधिक स्वायतत्ता के इस सांस्कृति ज़हर का ज़बर्दस्त विषनाश्क है। उसका दास उनेसिमुस भाग गया था और अपने स्वामी का उसने काफ़ी नुकसान किया था। हो सकता है कि उसने उसकी चोरी भी की हो (आयत 18)। पौलुस ने उनेसिमुस को अपने स्वामी के पास वापस भेजते हुए, उनके मिलाप में सहायता के लिए फिलेमोन के नाम एक पत्र भेजा। उस पत्र में पौलुस ने प्रतिज्ञा के करुणामय शब्दों के साथ फिलेमोन को प्रोत्साहित किया, ''तेरा विश्वास में सहभागी होना तुम्हारी सारी भलाई की पहिचान ... के लिए प्रभावशाली हो।'' अन्य शब्दों में विश्वास बांटने लिए था।

फिलेमोन के सामने परेशान करने वाली बात उसके साथ अकेले निपटने की नहीं थी। यह विश्वास की बात थी जिसे शेष कलीसिया के साथ साझा किया जाना आवश्यक था। मसीही लोगों के रूप में जो कुछ हम करते हैं, उसे ''मसीह के लिए'' करने से हम अकेले नहीं, बल्कि उसके सम्मान में रहते, सीखते और बढ़ते हैं।

कठिन लोग (आयत 6)

हर किसी का कठिन लोगों से वास्ता पड़ता है। उनसे बचा नहीं जा सकता! हर कलीसिया में चाहे वह बड़ी हो या छोटी, रोने-पीटने वाला, आलोचना करने वाला, शिकायत करने वाला या स्वार्थी एक आधा तो होता ही है, जो मण्डल की ऊर्जा और संसाधनों को बड़ी मात्रा में खर्च करवा देता है। परमेश्वर ने इन ''बहुत खर्चीले'' लोगों को एक ही जगह रखकर हर किसी को अकेले क्यों नहीं छोड़ दिया?

पहली बात तो यह कि कठिन लोगों के बिना कलीसिया की धारणा आकर्षक लग सकती है। परन्तु थोड़ा सा और ध्यान देने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि कठिन लोग (और कठिन परिस्थितियां) लोगों को बढ़ने में सहायता करते हैं। कोई धीरज में कैसे बढ़ सकता है, जब तक उसका धीरज परखा ही न जाए? कोई क्षमा देने में कैसे बढ़ सकता है, जब तक पहले वह आहत

न हुआ हो। कोई गलतियां रखने का हिसाब न करना कैसे सीख सकता है, जब तक उसकी गलतियों का हिसाब न रखा जा सके? कठिन लोग और कठिन परिस्थितियां वास्तव में कलीसिया के लिए परमेश्वर के बड़े दानों में से हो सकते हैं।

फिलेमोन के नाम पत्र से समझ में आता है कि कलीसियाओं में लोगों के बीच झगड़ों का सामना कैसे करना पड़ सकता है। आम तौर पर परेशानियां आने पर लोग घबरा जाते हैं और निराशा में सिर पटकने लगते हैं, पर कठिनाइयां कलीसिया के सामने बढ़ने के अद्‌भुत अवसर भी लाती हैं। फिलेमोन के नाम धमाकाखेज़ पत्र लिखते हुए पौलुस ने उन बड़ी सम्भावनाओं को देखा जहां से यह कष्टदायक समस्या कलीसिया को आगे ले जा सकती थी। उसकी प्रार्थना थी कि परिस्थिति के सुलझ जाने पर फिलेमोन और गहराई से मसीही विश्वास को पाए, अपने विश्वास को और गहराई से पाए, और सच्चाई से अपने विश्वास को बताए, और अपने ऊर्जावान नमूने के द्वारा कलीसिया को मज़बूत करे। कठिनाई कलीसिया में होने वाली बेहतरीन चीज़ हो सकती है।

हमें एक-दूसरे की आवश्यकता है (आयत 6)

अमेरिका के एक कबीले के प्राचीन समय की एक अद्‌भुत कहानी बताई जाती है, जिन्होंने एक नदी के किनारे डेरा लगाया था। एक दिन उन्होंने ऊपर की ओर दृष्टि करके अपने शत्रु पर उन पर आक्रमण करने के लिए पहाड़ों से नीचे आते हुए देखा। उन्हें घेरा डाला गया था और हर किसी को मालूम था कि नदी इतनी चौड़ी है कि शक्तिशाली तरंगों द्वारा बहा दिए जाने के बिना नदी के पार जाने के लिए ताकतवर से ताकतवर लोग भी इतनी फुर्ती नहीं कर सकते। उनके पास कोई चारा नहीं था इसलिए ताकतवर योद्धाओं ने छोटे और कमज़ोर लोगों को अपने कंधों पर उठाया और नदी में कूद पड़े। वे चकित रह गए कि वे सुरक्षित दूसरी ओर पहुंच गए थे। ऐसा लगता है कि बच्चों और कमज़ोरों का भार इतना था कि योद्धाओं के कदम नदी के तल पर सुरक्षित ढंग से पड़ गए थे। कबीले के हर व्यक्ति चाहे वह कमज़ोर हो या बलवान, का जीवित रहना आवश्यक था।

''क्या तुम्हें हमारी कोई बात पसन्द नहीं है?'' (आयत 7)

एक प्रचारक किसी बड़े नगर में रहता और काम करता था और रविवार के दिन उसे प्रचार करने के लिए एक छोटे गांव की कलीसिया में जाना पड़ता था। वह इस मण्डली के लिए कई महीनों से प्रचार कर रहा था कि एक रविवार की रात कुछ ऐसा हुआ जिससे अपनी सेवकाई को देखने का उसका नज़रिया सदा के लिए बदल गया। भाइयों में प्रचार करने और उन से मिलने के बाद एक दिन वह अपने घर जाने के लिए कार में बैठा। उसके कार को पार्किंग से निकालने से पहले मण्डली की एक महिला ने हाथ हिलाया और उससे बात करने के लिए उसके पास गई। शीशा नीचे करने पर वह देख सकता था कि वह चिल्ला रही थी। उसने पूछा कि क्या मुश्किल है तो उस स्त्री ने उत्तर दिया, ''क्या आपको *कोई बात* पसन्द नहीं है?''

उस महिला की सोच, जिसने प्रचार को बुरी तरह से स्तब्ध कर दिया था, यह थी कि प्रचारक अपने प्रवचनों में जो कुछ भी कहता था, कलीसिया उसे कर नहीं पा रही थी। घर को जाते हुए अपने मन में उसने उन प्रवचनों पर ध्यान किया जिन्हें वह सुनाता आ रहा था। उसे

समझ आया कि चाहे वह देहात की उस कलीसिया से प्रेम करता था, पर उसके प्रवचन विशेष रूप में उन बातों पर थे, जिन्हें वे नहीं कर रहे थे। उसी रात उसने निर्णय लिया कि वह भविष्य में अपने प्रचार में और संतुलित करेगा। अब उसे समझ आया कि मसीही लोग जो सही कर रहे हैं उसमें उन्हें पक्का किए जाने की आवश्यकता है।

फिलेमोन के नाम पत्र में पौलुस ने देने के लिए एक कठिन संदेश दिया। उसे सरकार, कानून, संस्कृति और प्रबन्धों के बारे में संवेदनाओं पर विचार करना आवश्यक था। यदि उसका संदेश सही ढंग से ग्रहण न किया जाता तो इससे क्रोध भड़क सकता था और कलीसिया में फूट पड़ सकती थी। मुद्दे को अपने हाथ में लेने से पहले उसने इस बात की पुष्टि करने के लिए कि जो कुछ फिलेमोन पहले से सही कर रहा है कुछ बातें कहीं। उसने उसे "प्रिय सहकर्मी" (आयत 1) कहते हुए सम्बोधित किया और उसे बताया कि वह फिलेमोन द्वारा दिखाए गए प्रेम और विश्वास के लिए परमेश्वर का धन्यवादी है (आयतें 4, 5)। उसने यह स्मरण करते हुए कि फिलेमोन ने कई जगहों पर मसीही लोगों से प्रेम करने और उन्हें प्रोत्साहित करने के द्वारा उसे "बहुत आनन्द और शांति" दी थी (आयत 7)। जो कुछ फिलेमोन पहले से कर रहा था, उसकी तारीफ़ करने बाद ही पौलुस ने उन बातों की ओर ध्यान दिलाया, जिन्हें फिलेमोन के लिए अभी करना आवश्यक था।

टिप्पणियां

[1]आयत 4 में आरम्भ करते हुए "तुझे" एकवचन है और तब तक एक वचन ही रहता है, जब तक यह आयत 22 के अन्तिम भाग में फिर से बहुवचन नहीं बन जाता। अपवाद की एक सम्भावना आयत 6 के निकट मिलती है जहां पौलुस, "*तुम्हारी* सारी भलाई की पहचान" की बात करता है। [2]जोसेफ ए. फिजामायर, *द लैटर टू फिलेमोन,* द एंकर बाइबल, अंक 34सी (न्यू यॉर्कः डबलडे, 2000), 97. [3]वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामैंट एंड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिटरेचर,* 3रा संस्क., संशो. संपा. फ्रैडरिक विलियम डैंकर (शिकागोः यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 2000), 335. [4]जेम्स डी. जी. डन्न, *ए एपिस्टल टू द कुलुसियंस एंड टू फिलेमोनः ए कमैंट्री ऑन द ग्रीक टैक्स्ट,* द न्यू इंटरनैशनल ग्रीक टैस्टामैंट कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगनः विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1996), 319. [5]बाउर, 766. [6]वही, 938. [7]वही, 69.